शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2014

विद्यार्थियों में नुक्कड़ नाटिका की प्रभाविता का स्वास्थ्य जागरूकता के सन्दर्भ में अध्ययन

*डॉ.लक्ष्मण शिंदे, **राघवेन्द्र हुरमाडे

*उपाचार्य, शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, भारत

**व्याख्याता, शिक्षा अध्ययनशाला , देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत शोध नुक्कड़ नाटिका की प्रभाविता का विद्यार्थियों में स्वास्थ्य जागरूकता के सन्दर्भ में एक प्रयोगात्मक शोध है, जिसमें नुक्कड़ नाटक द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में स्वास्थ्य जागरूकता को विकसित करने और उसकी प्रभाविता का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध का उद्देष्य था- नुक्कड़ नाटक के मंचन के पूर्व एवं पष्च परीक्षण अवस्थाओं में स्वास्थ्य जागरूकता के माध्य फलांकों की तुलना करना। प्रस्तुत शोध हेतु इन्दौर शहर के शासकीय शारदा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बड़ा गणपति की कक्षा 9वीं की 40 छात्राओं का उद्देश्यपरक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। शोध में 'एकल समूह पूर्व परीक्षण-पश्च परीक्षण अभिकल्प' का उपयोग किया गया। शोध के प्रदत्त विश्लेषण हेतु सहसंबंधित 'ज' परीक्षण का उपयोग किया गया।

प्रस्तावना

स्वास्थ्य जागरूकता का अर्थ व्यक्तिगत रूप में, परिवार के सदस्यों के रूप में एवं सामुदायिक रूप से स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाए रखने से होता है, जिसमें स्वास्थ्य को बढ़ाने, उसके रखरखाव को बनाए रखने, स्वास्थ्य सुधार में सहायक सकारात्मक तरीकों को अपनाने से है। अतः स्वास्थ्य जागरूकता का अन्तिम उद्देश्य स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक व्यवहार को बढ़ाना है। स्वास्थ्य जागरूकता लाने के लिए बहुत-से विद्यालयों में स्वास्थ्य षिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। स्वास्थ्य जागरूकता में कई पहलु सम्मिलित होते हैं जैसे- भावनात्मक स्वास्थ्य एवं स्वयं का एक सकारात्मक प्रतिबिंब, मनुष्य के शरीर एवं इसके जीवित अंगों के प्रति सम्मान एवं सुरक्षा, शारीरिक स्वास्थ्य, स्वास्थ्य मुद्दे, जैसे-शराब व ड्रग्स का उपयोग एवं लत; स्वास्थ्य से जुड़ी भ्रांतियाँ, सहज जीवन एवं शरीर के तंत्रों पर व्यायाम का प्रभाव; पोषण एवं वज़न पर नियंत्रण; यौन संबंध, सामुदायिक एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य से जुड़े वैज्ञानिक, सामाजिक एवं आर्थिक पहलु; संक्रामक एवं क्षीणताकारी बीमारियाँ जिसमें यौन संक्रामक बिमारियाँ सम्मिलित है; आपदा की तैयारी, सुरक्षा शिक्षा, चिकित्सकीय एवं स्वास्थ्य सेवा का चयन, स्वास्थ्य में भविष्य को चुनना। जब इन सभी पहलुओं के प्रति व्यक्ति में सकारात्मक रूप से जागरूकता आती है, तो यह जागरूकता स्वास्थ्य जागरूकता कहलाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.2007) के अनुसार उत्तम स्वास्थ्य से तात्पर्य न सिर्फ बीमारियों की अनुपस्थिति से है, बल्कि शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से अच्छा महसूस करने से होता है। इसके

विकास हेतु स्वास्थ्य जागरूकता आवश्यक होती है। स्वास्थ्य जागरूकता में स्वास्थ्य से जुड़े शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक व पर्यावरणीय इत्यादि समस्त पहलुओं का समावेश किया जाता है।

डब्ल्यू. एच. ओ. के अनुसार विश्व की 40 प्रतिशत जनसंख्या रोकथाम की जा सकने वाली बीमारियों से ग्रस्त है और 20 प्रतिशत जनसंख्या के पास बीमारी को रोकने या उपचार करने के लिए कोई स्रोत नहीं है। विश्व के 1/3 बच्चों के पास खाने को पर्याप्त नहीं मिलता। विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में स्वास्थ्य समस्याएँ पाई जाती हैं, जैसे- अल्पपोषित, कुपोषित, अत्यधिक पोषित; जिससे संतुलित वजन के ऊपर या नीचे इन बच्चों का वजन होता है। स्वास्थ्य जागरूकता नहीं होने के कारण इनमें दैनिक आवश्यकता से कम फल एवं सब्जियों को भोजन के रूप में लेने, नियत मात्रा में प्रोटीन, वसा व कार्बोहाइड्रेट का न लेना, अत्यधिक उच्च वसायुक्त खाना लेने, धूम्रपान, शराब, ड्रग्स के उपयोग इत्यादि प्रवृत्तियाँ पायी जाती है। साथ ही स्वच्छता का ध्यान न रख पाने से वे विभिन्न संक्रामक बीमारियों से ग्रस्त होते जाते हैं।

पूर्व शोध कार्य

स्वास्थ्य जागरूकता से संबंधित पूर्व शोध कार्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य जागरूकता के क्षेत्र में अल्प शोध हुए हैं। चन्द्रमणी (1988) ने पोषण शिक्षा का खाने की आदतों, अभिवृत्तियों एवं ज्ञान पर सकारात्मक प्रभाव बताया। गोपालन (1989) ने स्वास्थ्य षिक्षा कार्यक्रमों को लागू करने वाले उच्च एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के व्यक्तियों को उदासीन पाया। राममोहन (1990) ने पोषण गेम किट को स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने में सहायक पाया। श्रीदेवी (1990) ने पोषण से संबंधित ज्ञान, अभिवृत्ति एवं क्रियाविधि में सकारात्मक सहसंबंध पाया। भट्टाचार्य (1991) ने सामुदायिक संपर्क कार्यक्रम से जुड़े विद्यालयों में स्वास्थ्य जागरूकता को ज्यादा पाया। गौरी (1991) ने ग्रामीण अनपढ़ महिलाओं पर जनसाक्षरता कार्यक्रम का सकारात्मक प्रभाव पाया। पटनायक (1991) ने शारीरिक विकास का शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव बताया।

वर्तमान में भी भारत में स्वास्थ्य नीतियों पर खर्च का प्रावधान बहुत कम है। आज भी स्वास्थ्य जागरूकता सरकार की प्राथमिकता नहीं बन पाई है। हालांकि सरकार ने कई सराहनीय कदम उठाए हैं, लेकिन वे अपर्याप्त हैं। साथ ही जनसमूह में पीढ़ियों से चली आ रही स्वास्थ्य से जुड़ी गलत धारणाएँ, भ्रांतियाँ भी स्वास्थ्य जागरूकता लाने में बाधा पैदा करती हैं। लोगों व विशेषकर विद्यार्थियों में स्वास्थ्य जागरूकता का स्तर निम्न है। समाज व राष्ट्र के विकास हेतु और भी प्रयास व सार्थक शोध कार्यों की आवश्यकता है। साथ ही हमारे समाज में स्त्री की परिवार में महती भूमिका होने से उसे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाने पर वह परिवार को भी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बना सकती है। विद्यालयीन स्तर पर स्वास्थ्य जागरूकता पर शोध नहीं होने से विद्यालयों में सही तरीके से स्वास्थ्य शिक्षा को प्रसारित नहीं किया जा रहा है। निष्कर्षतः स्वास्थ्य जागरूकता अति महत्वपूर्ण है और उच्चतर माध्यमिक स्तर के

विद्यार्थियों तथा विशेषकर छात्राओं में रुचिकर प्रकार से स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का विकास किए जाने की आवश्यकता है। चूँकि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नुक्कड़ नाटिका की प्रभाविता का विद्यार्थियों में स्वास्थ्य जागरूकता के विकास के सन्दर्भ में अध्ययन से संबंधित कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। अतः इससे प्रस्तुत शोध की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य था-

नुक्कड़ नाटक के मंचन के पूर्व एवं पष्च परीक्षण अवस्थाओं में स्वास्थ्य जागरूकता के माध्य फलांकों की तुलना करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध कार्य की शून्य परिकल्पना निम्न थी -

नुक्कड़ नाटक के मंचन के पूर्व एवं पश्च परीक्षण अवस्थाओं में स्वास्थ्य जागरूकता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध की समष्टि इन्दौर शहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी थे। इस समष्टि में से न्यादर्श के चयन हेतु सुविधाजनक न्यादर्शन तकनीक का उपयोग किया गया। न्यादर्श हेतु इन्दौर शहर के शासकीय शारदा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बड़ा गणपति की कक्षा 9वीं की 40 छात्राओं का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों की उम्र 13-15 वर्ष के मध्य थी। चयनित छात्राओं का अनुदेशन माध्यम हिन्दी था। इन छात्राओं में मध्यम एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा शहरी व ग्रामीण दोनों आवासीय पृष्ठभूमि वाले छात्राएँ सम्मिलित थीं। इन छात्राओं में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग व सामान्य वर्ग अर्थात् आरक्षित एवं अनारक्षित दोनों वर्ग की छात्राएँ सम्मिलित थीं।

प्रयोगात्मक प्राकल्प

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति प्रयोगात्मक थी। अध्ययन में ''एकल सूमह पूर्व परीक्षण-पष्च परीक्षण प्राकल्प (Pre test-Post test Single Group Design) का उपयोग किया गया। प्राकल्प का सांकेतिक रूप इस प्रकार है-

0×0

(केम्पबेल एवं स्टेनले, 1963)

जहाँ -

0 = परीक्षण (स्वास्थ्य जागरूकता परीक्षण),

× = उपचार (नुक्कड़ नाटक)।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु केवल एक प्रयोगात्मक समूह लिया गया। प्रयोगात्मक समूह के छात्राओं को 'नुक्कड़ नाटक' द्वारा उपचार दिया गया। अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की 'स्वास्थ्य जागरूकता' आश्रित चर थी।

उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की 'स्वास्थ्य जागरूकता' परिवर्ती से संबंधित प्रदत्त एकत्रित किए गए। इस परिवर्ती

के आकलन हेतु शोधकर्ताओं द्वारा निर्मित 'स्वास्थ्य जागरूकता परीक्षण' का उपयोग किया गया। इस जागरूकता परीक्षण में स्वास्थ्य व उसके विभिन्न पक्षों जैसे- शारीरिक स्वास्थ्य, स्वास्थ्य मुद्दे, जैसे-तम्बाकू, शरीर व ड्रग्स का उपयोग एवं लत, शरीर के तंत्रों पर व्यायाम का प्रभाव, पोषण एवं वज़न पर नियंत्रण, सामुदायिक एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य से जुड़े पहलू, संक्रामक एवं क्षीणताकारी बीमारियाँ इत्यादि से संबंधित कुल 50 बहुविकल्पीय वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों को सम्मिलित किया गया था। परीक्षण की अवधि 40 मिनिट थी। परीक्षण का पूर्णांक 50 था और सभी प्रश्नों के लिए 1 अंक निर्धारित था।

प्रदत्त संकलन

सर्वप्रथम न्यादर्श हेतु चयनित विद्यालय के प्राचार्य से शोध कार्य हेतु अनुमति ली गयी। तत्पश्चात प्राचार्य द्वारा निर्देशित अध्यापक से संपर्क किया गया और उन्हें शोध के उद्देश्य से अवगत कराया गया। साथ ही निर्देशित शिक्षक द्वारा छात्राओं से 'स्वास्थ्य जागरूकता परीक्षण' को हल किए जाने तथा नुक्कड़ नाटिका के मंचन हेतु दिनांक व समय तय किया गया। तत्पश्चात न्यादर्श की संख्या अनुरूप शोध के आश्रित चर के आकलन हेतु आवष्यक 'स्वास्थ्य जागरूकता परीक्षण' की छायाप्रतियाँ प्राप्त कर ली गयी। इसके पश्चात चयनित छात्राओं को मौखिक रूप से दिशा-निर्देश देकर अध्ययन का उद्देश्य स्पष्ट किया गया। न्यादर्श हेतु चयनित छात्राओं पर नुक्कड़ नाटिका के मंचन के पूर्व एक 'स्वास्थ्य जागरूकता परीक्षण' का प्रशासन किया गया। तत्पश्चात नुक्कड़ नाटिका के मंचन द्वारा सभी छात्राओं का स्वास्थ्य जागरूकता के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान आकृष्ट किया गया एवं छात्राओं को स्वास्थ्य हेतु जागरूक बनाने का प्रयास किया गया। नुक्कड़ नाटिका के मंचन के पश्चात समस्त छात्राओं पर स्वास्थ्य जागरूकता के पश्च-परीक्षण का प्रशासन किया गया। पश्च-परीक्षण के पश्चात छात्राओं की उत्तर-पुस्तिकाओं को एकत्र कर एवं मानक उत्तरों से मिलान कर 'स्वास्थ्य जागरूकता परीक्षण' पर अंक प्रदान किए गए। इस प्रकार चयनित न्यादर्श के पूर्व एवं पश्च स्वास्थ्य जागरूकता फलांको को प्राप्त किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में नुक्कड़ नाटक के मंचन के पूर्व एवं पश्च परीक्षण अवस्थाओं में स्वास्थ्य जागरूकता के माध्य फलांकों की तुलना हेतु सहसंबंधित टी (ज) परीक्षण का उपयोग किया गया। परिणाम एवं व्याख्या- प्रदत्त विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को सारणी 1.1 में प्रदर्शित किया गया है-

परीक्षण	संख्या	माध्य	मानक विचलन	सहसंबंध गुणांक	स्वतंत्रता की कोटि (df)	टी' मान
पूर्व परीक्षण	30	24.23	5.48	-1.699 $x10^{-03}$	28	6.76 **
पश्च परीक्षण	30	33.90	6.39			

** 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

सारणी 1.1 से स्पष्ट है कि स्वास्थ्य जागरूकता के लिए 'टी' का मान 6.76 है, जो स्वतंत्रता की कोटि= 28 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अर्थात् नुक्कड़ नाटक के मंचन के पूर्व एवं पश्च परीक्षण अवस्थाओं में स्वास्थ्य जागरूकता के माध्य फलांकों में सार्थक रूप से अंतर हैं। अतः इस स्थिति में शून्य परिकल्पना ''नुक्कड़ नाटक के मंचन के पूर्व एवं पश्च परीक्षण अवस्थाओं में स्वास्थ्य जागरूकता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' निरस्त की जाती है। आगे स्पष्ट है कि नुक्कड़ नाटक के मंचन के पश्चात छात्राओं के स्वास्थ्य जागरूकता माध्य फलांक 33.90 है, जो कि नुक्कड़ नाटक के मंचन के पश्चात छात्राओं के स्वास्थ्य जागरूकता माध्य फलांक 24.23 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नुक्कड़ नाटक के द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता में सार्थक वृद्धि हुई अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्वास्थ्य जागरूकता के सन्दर्भ में नुक्कड़ नाटक को प्रभावी पाया गया।

निष्कर्ष एवं विवेचना

प्रस्तुत शोध से अग्र निष्कर्ष प्राप्त हुआ - उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नुक्कड़ नाटक के द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता में सार्थक वृद्धि हुई अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्वास्थ्य जागरूकता के सन्दर्भ में नुक्कड़ नाटक को प्रभावी पाया गया। नुक्कड़ नाटिका के प्रभावी पाए जाने सम्भावित कारण अग्र हो सकते हैं- नुक्कड़ नाटिका द्वारा व्याख्यान की एकरूपता व नीरसता को दूर किया जाना, नुक्कड़ नाटिका का विद्यार्थी केन्द्रित गतिविधि होना, नुक्कड़ नाटिका में दृश्य एवं श्रव्य अर्थात् दोनों ज्ञानेन्द्रियों का अधिक सक्रिय प्रयोग होना, नुक्कड़ नाटिका में छात्राओं ने सहभागिता का सक्रियता व उत्साह से सहभागिता निभाना, नुक्कड़ नाटिका में स्वास्थ्य जागरूकता से संबंधित अधिकाधिक पहलुओं का समावेश किया जाना, नुक्कड़ नाटिका के मंचन के बीच-बीच में स्वास्थ्य जागरूकता से संबंधित 'चार्ट' एवं 'कार्डस्' का प्रयोग किया जाना, नुक्कड़ नाटिका की आलेख (Script), अभिनय व प्रस्तुतीकरण का रोचक व प्रभावी होना, नुक्कड़ नाटिका के मंचन के दौरान छात्राओं के स्तर को ध्यान में रखा जाना इत्यादि। इन सभी संभावित कारणों से नुक्कड़ नाटिका को कक्षा 9वीं की छात्राओं की स्वास्थ्य जागरूकता के सन्दर्भ के संदर्भ में प्रभावी पाया गया।

सन्दर्भ

1 गर्ग, एम. एल.(1971), शिक्षालय स्वास्थ्य, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल.

2 माथुर, एस. एस.(1970), विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा. नेशनल प्रेस, मेरठ.

3 रस्तोगी, एम. एल.(1982), विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, शिक्षा साहित्य प्रकाशक एवं विक्रेता, मेरठ.

4 रावत, एम. एस. (1973), स्वास्थ्य विज्ञान, पुस्तक प्रकाशन - मार्डन प्रेस, आगरा

5 शैरी, जी. पी. (1990), स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

6 सुखलाल, जी. (1991), स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, साहित्यागार प्रिन्ट वर्ल्ड जयपुर

7 वर्मा, आर. एस. (1992), विद्यालय स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

8 Buch M.B. (Ed.): First survey of Research in Education. Baroda: Centre of Advanced Study in Education, 1974.

9 Buch, M. B. (Ed.): Second Survey of Research in Education (1972-1978). Baroda: Society for Educational Research and Development, 1979.

10 Buch, M. B. (Ed.): Third Survey of Research in Education (1978-1983). New Delhi: NCERT, 1986.

11 Buch, M. B. (Ed.): Forth Survey of Research in Education (1983-1988)- Vol I & II. New Delhi: NCERT, 1991.

12 NCERT: Fifth Survey of Research in Education-Vol I & II (1988-1992). New Delhi: NCERT, 1997-2000.

13 NCERT: Sixth Survey of Research in Education-Vol I & II (1993-2000). New Delhi: NCERT, 2006-2007.